AN INTERNATIONAL CONFERENCE ON
Humanities, Science & Research
At Asha Girls College, Panihar chack, Hisar (Haryana)
27-28th January, 2024

भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

हिमजा पांडे, संगीत विभाग, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। यह संगीत परंपरा न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि भारतीय दर्शन, आध्यात्मिकता, अनुशासन एवं सांस्कृतिक चेतना की भी अभिव्यक्ति करती है। वर्तमान समय में बदलते सामाजिक, शैक्षिक एवं तकनीकी परिवेश के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना तथा इसकी परंपरागत एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियों की विशेषताओं, चुनौतियों एवं संभावनाओं का मूल्यांकन करना है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा परंपरागत रूप से गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रही है, जिसमें संगीत का ज्ञान, रागों की संरचना, ताल, लय, स्वर साधना एवं गायन-वादन की बारीकियाँ व्यक्तिगत प्रशिक्षण के माध्यम से प्रदान की जाती थीं। आधुनिक समय में संगीत शिक्षा विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों तथा ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा भी प्रदान की जा रही है। इस परिवर्तन ने संगीत शिक्षा को व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रस्तुत अध्ययन में पाठ्यक्रम की संरचना, शिक्षण विधियों, व्यावहारिक प्रशिक्षण, मूल्यांकन प्रणाली, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध तथा तकनीकी संसाधनों के उपयोग का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा और आधुनिक संस्थागत शिक्षा के बीच समन्वय, प्रशिक्षित संगीत शिक्षकों की उपलब्धता, व्यावहारिक अभ्यास की कमी, विद्यार्थियों की घटती रुचि तथा व्यावसायिक अवसरों जैसी चुनौतियों पर भी विचार किया गया है। डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन संगीत कक्षाओं, रिकॉर्डिंग सुविधाओं एवं डिजिटल पुस्तकालयों ने संगीत शिक्षा के नए अवसर विकसित किए हैं। शोध में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की मूल परंपरा एवं शास्त्रीयता को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक शिक्षण तकनीकों का समुचित उपयोग किया जाना चाहिए। निष्कर्षतः, भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक, रोजगारोन्मुख एवं तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए परंपरागत ज्ञान और आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: भारतीय शास्त्रीय संगीत, संगीत शिक्षा, गुरु-शिष्य परंपरा, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, संगीत शिक्षण पद्धति, राग एवं ताल, संगीत संस्थान, डिजिटल संगीत शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत, संगीत प्रशिक्षण, शैक्षिक मूल्यांकन, तकनीकी नवाचार